[श्री कृष्णदत्त सुल्तानपुरी]

जतोग, सबाठू तथा नाहन आदि छावनियां स्थित हैं । ये छावनियां भूतपूर्व अंग्रेजी शासन के समय से चली आ रही हैं । पहले इन छावनियों के विकास तथा उन क्षेत्रों में रहने वाले साधारण नागरिकों की सुविधाओं की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था ।

इन स्थानों की जलवायु उत्तम होने के कारण गर्मियों के मौसम में काफी मात्रा में पर्यटक यहां आते हैं जिससे वहां के लोगों को आर्थिक लाभ पहुंचता था । परन्तु वर्तमान में इन छावनियों की देखभाल तथा विकास की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है । इसका परिणाम यह है कि वहां की सड़कें टूट फूट रही हैं, सफाई का स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है, पीने के पानी के अभाव के कारण न केवल वहां के नागरिकों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है बल्कि पर्यटकों को भी भारी असुविधा हो रही है ।

धर्मपुर से सबाठू तक की सड़क जो सेना के अधीन है उसकी बुरी हालत है । इस सड़क को चौड़ा करने तथा इसकी मरम्मत करने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है । इस सड़क पर भारी यातायात होने के कारण नित्य प्रति कोई न कोई दुर्घटना होती रहती है । क्योंकि यह सड़क राज्य सरकार के अधीन नहीं है इसलिए वह भी इसकी मरम्मत नहीं करती है । अतः यह आवश्यक है कि यातायात को ध्यान में रखते हुए तुरन्त इस सड़क को चौड़ा करने की व्यवस्था की जाए ।

इसी प्रकार इन छावनियों में पीने के पानी की अतिरिक्त व्यवस्था का किया जाना नितान्त आवश्यक है ।

इन छावनियों में काफी मात्रा में बंजर भूमि पड़ी हुई है जो इस समय किसी भी प्रयोग में नहीं लाई जा रही है । इस भूमि को उन्हीं क्षेत्रों में रहने वाले भूमिहीनों में बांट दिया जाना चाहिए ताकि इनका विकास हो सके ।

मैं माननीय रक्षा मंत्री से अनुरोध करता हूं कि उपरोक्त विषयों पर तुरन्त ध्यान देकर आवश्यक कार्यवाही करने की कृपा करें ।

(v) ENHANCEMENT OF RATES AND INADEQUATE SUPPLY OF WATER AND ELECTRICITY TO FARMERS

श्री मणीराम बागड़ी (हिसार) : यही वह मौसम है जबकि किसानों को अपने खेतों की ओर ज्यादा ध्यान देना पड़ता है ताकि उनकी फसल को कोई नुकसान न पहुंचे । हरियाणा और अन्य राज्यों ने गेहूं की फसल में काफी सफलता प्राप्त की है और वे इसको पूर्ति देश के सभी भागों को कर रहे हैं । यह बहुत खेद की बात है कि ऐसे समय पर जबकि पम्प सेटों के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी और बिजली उपलब्ध होनी चाहिए, अधिकारियों ने बिजली की दरों में अनुचित बढ़ोतरी कर दी है । यह वृद्धि अनुचित, अवांछित और अभूतपूर्व है । स्वाभाविक है कि इसमें बड़े पैमाने पर असंतोष पैदा हुआ है । मैं स्वयं भिवानी जिले के लोहारू गया था ताकि वहां जाकर सही सही जानकारी प्राप्त कर सकूं । मैं यह पूरी तरह से मानता हूं कि किसानों की मांगें न्यायसंगत और उचित हैं और यह बात बहुत आवश्यक है कि कम से कम एक महीने के लिए दिन रात बिजली की सप्लाई होती रहे और उनकी दर में कोई वृद्धि न हो ताकि किसान गेहूं के उत्पादन को बढ़ाने के लिए पूरा प्रयास कर सके । चूंकि इससे किसानों के हितों की नुकसान

पहुंचता है और साथ ही पूरे देश को हानि पहुंचती है, मैं केन्द्रीय सरकार से आग्रह करता हूं कि वह बिना किसी विलम्ब के ठोस उपाय करें ताकि किसानों की इन कठिनाइयों का हल निकाला जा सके ।

12.10 Hrs.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS—*contd.*

MR. SPEAKER: The House will now take up further consideration of the following motion moved by Shri V. N. Gadgil on the 19th February, 1981 and seconded by Shri Nawal Kishore Sharma on the 20th February, 1981, namely:—

"That an Address be presented to the President in the following terms :—

'That the Members of Lok Sabha assembled in this Session are deeply grateful to the President for the Address which he has been pleased to deliver to both Houses of Parliament assembled together on the 16th February, 1981.'

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY (Calcutta-South) : Mr. Speaker, Sir, with your kind permission I continue my speech. Sir, in this Address, as I said yesterday, we find that the Government has painted a rosy picture about the future of the country.

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर): अध्यक्ष जी, होम मिनिस्टर नहीं हैं ।

अध्यक्ष महोदय : दो मंत्री बैठे हुए हैं।

श्री राम विलास पासवान : रिप्लाई कौन करेगा ?

अध्यक्ष महोदय : आप जवाब देखिएगा। आपको आम खाने से मतलब है या पेड़ गिनने से ?

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY: Sir, we draw lessions from the experience of the past and from those lessions, we plan our programme and policies for the future. Now, what are the lessions of the past ? I was quoting from the Report of the Planning Commission that in India, during all these years of planning, the rich have become richer and the poor poorer. Only the other day, the Minister mentioned on the floor of the House about the Fair Price Shops. Now, the point is that the persistent refusal of the Central Government to take over the wholesale trade in the country will make a mokery of the existence of the Fair Price Shops. Until and unless you control the whole-sale trade, you cannot make available the essential commodities to the common people at reasonable prices. This Government is doing exactly the opposite. It is planning to withdraw the existing subsidies. In the Sixth Plan document, it is said that to have more investible surplus subsidies which are given for foodgrains should be reduced. Then what will happen to the prices of the commodities which are most essential for the common people ? Our friends are eloquent about the performance of Shrimati Indira Gandhi. This time she has been in power for more than thirteen months, but she was in power for more than 11 years earlier. What was her performance during that dynamic decade, during that golden era of our history. Well, I will rely on the statistics supplied by the governmental agencies to judge the performance during the whole period of Shrimati Gandhi. The wholes le price index saw an increase of 134.4 per cent between March 1966 and March 1977. That was the golden era, the dynamic decade. The rise in prices was 134.4 per cent. Then, the consumer price for industrial workers increased by 117.8 per cent. What an example of Government that works ! Some hon. Members from the treasury benches would ask from where I am quoting these figures. For their information, I would like to mention that I am quoting from the Reserve Bank bulletin.

Then, according to the statistics supplied by the Planning Commision, in 1966 the index of real income—I want to emphasise the words 'real income'—of workers with less than Rs. 400 of income per month was 95, and within a period of ten years, that is in 1975, it was reduced to 66. What an improvement ! It came down from 95 to 66 during that dynamic decade of Shrimati Gandhi.

Now, let us see the condition of the agricultural workers. There was a massive peasant rally in Delhi recently. Well, the ruling party has a right to do it, but it has no right to bluff the people. They are shedding crocodile tears for the rural